ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/337917648

□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ : □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□

Article · January 2017

CITATIONS
0

READS
25

1 author:

Sangeeta Singh
Dr. C. V. Raman University
6 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Sangeeta Singh on 13 December 2019.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

ग्रामीण अंचल के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में पुस्तकालयों की भूमिका : आरंग विकास खंड के विशेष संदर्भ में

डॉ. संगीता सिंह
विभागाध्यक्ष (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान)
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड–कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
श्रीमती वी. उमा
एम.फिल. शोधछात्रा (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान)
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास वास्तव में समाज के चहुँमुखी विकास में निहित है, यदि समाज और उसमें स्थित व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के विकास, अपने कर्तव्य, अपने अधिकार व अपनी सुरक्षा के प्रति सजग रहे तो उस व्यक्ति का विकास निश्चित है तथा उसी के साथ समाज जैसी संस्था का विकास भी होता चला जाता है। इस प्रकार मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक विकास जिस समाज में हो तो उसका विकास स्वतः होता चला जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि विकास या प्रगति की इन कसौटियों पर खरा उतरने के लिए तथा विकस के इन बिन्दुओं तक पहुंचने के लिए व्यक्ति को सुविधाए उपलब्ध होना। जब तक किसी व्यक्ति को न्यूनतम सुविधाएं उपलब्ध न हो वह स्वयं का विकास किस प्रकार करेगा? शहरी क्षेत्र में सुविधाओं का अंबार होता है। आर्थिक दृष्टि से चाहे व्यक्ति संपन्न हो अथव विपत्र उन्हें सुविधाओं का ज्ञान होता हैं। इन क्षेत्रों में यदि किसी कारण वश विकास अवरूद्ध होता है तो उसका कारण मूलभूत आवश्यकता की

AIYRA
The journal of Young Researchers
A Quarterly Multidisciplinary Peer - Reviewed Research Journal
Vol 04 / No 14
Received on 22/03/2017
Revised on 28/03/2017
Accepted on 11/04/2017

Scanned by CamScanner

कमी नहीं है क्योंकि उनकी मूलभूत जरूरतें जो उनके विकास में सहायक होती हैं, उनके चारों ओर विद्यमान होती हैं। जरूरत केवल इस बात की होती है कि वे वहां विद्यमान सुविधाओं का दोहन किस प्रकार करते हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्र में न सुविधाएं पर्याप्त होती हैं न ही सुविधाओं की जानकारी। यही कारण है कि ग्रामीण व शहरी जन जीवन में अत्यंत विषमता होती है तथा ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र की प्रगति का मूल्यांकन अनेक क्षेत्रों में एक ही बिन्दुओं पर नहीं किया जा सकता है। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहां पर ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के प्रारंभिक चरण ही पूरे नहीं हो पाए हैं यथा शिक्षा के प्रति जागृति, स्वास्थ्य संबंधी जागृति आदि। अतः ग्रामीण क्षेत्र में प्रगति की कसौटी निम्न हो सकती हैं –

1. शिक्षा के प्रति जागृति ,स्वास्थ्य के प्रति चेतना 2. खानपान संबंधी जागरूकता, मूलभूत आवश्यकता (यथा आवास, पेयजल, बिजली) की पूर्ति। 3. संगठित व छोटा परिवार तथा प्राकृतिक साधनों का संरक्षण 4. मनोरंजन के साधन ,कार्य क्षमता में वृद्धि, व्यावसायिक शिक्षा का विकास, सामाजिक सुरक्षा के प्रति चेतना एवं सामाजिक बुराईयों एवं कुरीतियों से स्वयं को दूर रखना

पुस्तकालय के माध्यम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास

ग्रामीण विकास में पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में कार्य कर विकास को गति प्रदान कर सकता है। देश के हर क्षेत्र में, समाज में पुस्तकालय की आवश्यकता को महसूस किया जाने लगा है। वर्तमान में पुस्तकालयों को किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, नागरिक एवं शिक्षा के विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं साधन के रूप में अति आवश्यक समझा जाने लगा है। ग्रंथालयों के प्रति ऐसी धारणा का उद्भव निःसंदेह पाश्चात्य देशों की देन है तथापि वर्तमान में सभी देश इसकी आवश्यकता एवं महत्व को जानने एवं मानने लगे हैं। डॉ. रंगनाथन ने आधुनिक पुस्तकालय के संबंध में कहा है कि "पुस्तकालय उस संस्थान को कहते हैं जो समाज द्वारा समाज के लिए स्थापित किया जाता है। इसका मुख्य सामाजिक उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रकाशित पुस्तकों द्वारा जीवन भर स्वशिक्षा का अवसर अदान करना है। इन पुस्तकों का संगठन, प्रबंध एवं सेवा उन लोगों द्वारा होती है जो सोये हुए विचारों को विकासशील एवं

Scanned by CamScanner

वैकल्पिक अवस्था में परिवर्तन करने में प्रवीण होते हैं। इस प्रकार यह एक छोटा सा बिजली घर है जो नई पुस्तकों में बंधी विचारशक्ति को भविष्य में डालने, विकसित करने तथा प्रसार करने के लिए खोला जाता है"।

यह बात पूर्ण रूपेण सत्य है कि पुस्तकालय मानव समाज की उन्नति के लिए उतना ही अनिवार्य है जितना कि अस्पताल, भोजन, वस्त्र, मकान व शिक्षण संस्था। शैक्षणिक व बौद्धिक आवश्यकता की पूर्ति के अलावा मानव समाज के सामाजिक प्रगति हेतु भी पुस्तकालय उतना ही महत्वपूर्ण है। इसकी आवश्यकता उन क्षेत्रों में और भी अधिक होती है जहां जाननकारियों का अभाव है। पुस्तकालयों में जानकारियों का भण्डार होता है और ग्रामीण जानकारी के अभाव में भटकते हैं, पिछड़े रहते हैं। तब इस भण्डार को यदि ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध करा दिया जाए तो इससे ग्रामीण भरपूर फायदा उठा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण अपनी एक छोटी सी समस्या अथवा सहायता के लिए दर–दर भटकता है वहां पुस्तकालय इस भटकाव को रोक सकता है अपने ज्ञान भंडार से। पुस्तकालय ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त समाजिक बुराईयों को ज्ञान बांटकर दूर कर सकता है। अज्ञानता सभी समस्याओं की जड़ है और पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाना है। लाखों ग्रामीण जो आज भी अज्ञानता के अंधेरे में भटक कर अपने विकास को ठप्प किए हुए है उस अंधेरे को पुस्तकालय के माध्यम से दूर किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय बहुत सुदृढ़ स्थिति में नहीं है तथा जो गिने चुने पंचायत व साक्षरता पुस्तकालय कार्यरत हैं उनकी सेवाएं अत्यंत सीमित हैं जो कि पुस्तकालय के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम नहीं है परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय की आवश्यकता तो है। पूर्व में विवेचित समाजिक व सांस्कृतिक समस्याएं इस जिले के विकास में भी बाधा डालती अतः समग्र विकास हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय की स्थापना आवश्यक है।

पुस्तकालय की आवश्यकता

1. **सामाजिक आवश्यकताः** पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है अतः यह बिना किसी भेदभाव के समस्त लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान करता है चूंकि ग्रामीण क्षेत्र में जातिवाद,

Scanned by CamScanner

भेदभाव, ऊ चनीच की भावनाएं अभी तक पूर्ण रूपप से समाप्त नहीं हो पाई है अतः यह एक ऐसा स्थान हो सकता है जो कि इन दूरियों को मिटाने में सक्षम हो सके। शिक्षा सभी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में समर्थ है और पुस्तकालय शिक्षा के इस सामर्थ्य को गांवों में व्यवहारिक रूप देकर सामाजिक कार्य के रूप में गांवों में प्रगतिशील विचारों को जन्म देगा।

2.शैक्षणिक आवश्यकता:– पुस्तकालय स्वशिक्षा का एक ऐसा केन्द्र है जो जीवनपर्यन्त व्यक्ति को अध्ययन से जोड़े रखता है। जहां ग्रामीण क्षेत्र में यह समस्या विकराल रूप में है कि छात्र विभिन्न कारणों से अपना अध्ययन बीच में ही छोड़ देते हैं वहां यह एक ऐसे केन्द्र के रूप में कार्य करेगा जहां शिक्षा के विभिन्न फायदों को ग्रामीणों के समक्ष समय–समय पर रख सके ताकि ग्रामीण अध्ययन एवं शिक्षा को हल्के ढंग से न लेकर गंभीरता पूर्वक अध्ययन जारी रख सके। जीवकोपार्जन में लगे ग्रामीण एक निश्चित समय के बाद शैक्षणिक गतिविधि से पूरी तरह हट जाते हैं जो कि उनके व्यक्तित्व के विकास को अवरूद्ध करती हैं और वे एक सीमा में ही बंधे रह जाते है। पुस्तकालय इस बंधन को प्रभावकारी ढंग से तोड़ कर उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायता पहुँचा सकता है। अध्ययन क्षेत्र के सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि गांवों में शिक्षा के प्रति ग्रामीणों का रूझान सामान्य है वहीं व्यक्तिगत सर्वेक्षण में भी यह देखा गया कि गांवों में उच्च शिक्षित व्यक्तियों की संख्या कम है।

3. नागरिक आवश्यकता :– विकास के समस्त मार्ग अध्ययन एवं शिक्षा के द्वार से ही प्रारंभ होते हैं। यदि बालक को बचपन से ही अपनी उत्सुकताओं का समाधान व जवाब नहीं मिलेगा तो धीरे–धीरे उसमें किसी भी बात के लिए उत्सुकता नहीं रह जाएगी। शहरी क्षेत्र में माता पिता, भाई–बहन, आसपास का वातावरण इतना शिक्षित होता है कि वह बाल सुलभ प्रश्नों का उत्तर व उनकी उत्सुकता का समाधान कर देता है किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में इसका सर्वथा अभाव है। न तो वहां ऐसा वातावरण है और न ही इतने शिक्षित माता–पिता। यही कारण है कि वहां के बच्चे शहरी क्षेत्र के बच्चों से मानसिक स्तर पर अत्यंत नीचे होते हैं और कहीं–कहीं पर तो वे लोगों के हंसी के पात्र भी बन जाते हैं। सर्वे

Scanned by CamScanner

में यह देखा गया है कि मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा, ज्ञान एवं जानकारी देने के प्रमुख साधन जैसे पत्र–पत्रिका, रेडियो, टी.वी. का गांव में अभाव है यद्यपि 90 प्रतिशत लोगों ने पत्र/पत्रिका पढ़ने में अपनी रूचि प्रदर्शित की है वहीं मात्र 39 प्रतिशत लोगों ने समाचर पत्र एवं 21.6 प्रतिशत व्यक्तियों ने पत्रिकाएं क्रय करने की बात कही है (इस प्रतिशत में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो समाचार पत्र एवं पत्रिका दोनों क्रय करने की बात कही है (इस प्रतिशत में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो समाचार पत्र एवं पत्रिका दोनों क्रय करते हैं जो कि मात्र 17प्रतिशत हैं)

व्यक्तिगत उत्तरदाता

समाचार पत्र

(उत्तरदाता की कुल संख्या – 400)

पढ़ते हैं	नहींपढ़ते	जवाब अप्राप्त
321	49	30

पढ़ने वालों की संख्या 90 प्रतिशत

पत्रिकाएं

(उत्तरदाता की कुल संख्या–300)

पढ़ते हैं	नहीं पढ़ते	जवाब अप्राप्त
247	119	34

पढ़ने वालों की संख्या 65.6 प्रतिशत

समाचार पत्र एवं पत्रिका क्रय करने वालों की संख्या

(उत्तरदाता की कुल संख्या –300)

समाचार पत्र	पत्रिका क्रय	पत्र/पत्रिका क्रय	क्रय नहीं करते
85	43	63	209

क्रय करने वाले का प्रतिशत 38.6 प्रतिशत

क्रय नहीं करते 61.3 प्रतिशत

आधुनिक संचार माध्यम

रेडियो		टी.वी	
उपलब्ध	अनुपलब्ध	उपलब्ध	अनुपलब्ध
159	241	165	245

Scanned by CamScanner

(39.75 प्रतिशत) (60.25 प्रतिशत) (34.75 प्रतिशत) (65.25 प्रतिशत)

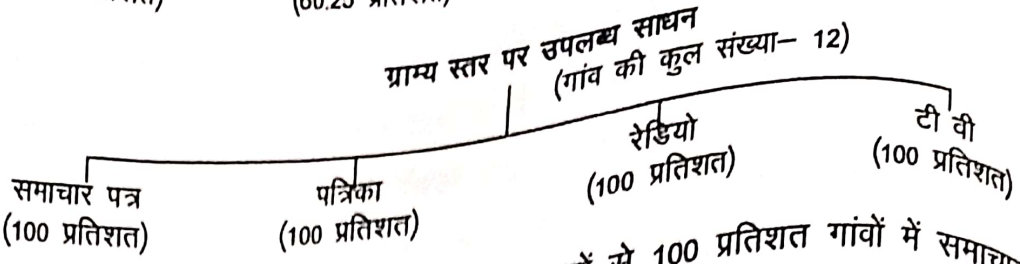

जिन गांवों का सर्वेक्षण किया गया उनमें से 100 प्रतिशत गांवों में समाचार पत्र उपलब्ध होते हैं जिनमें प्रमुख हैं पंचायिका एवं रोजगार निर्माण तथा सर्वेक्षित गांवों में से मात्र 100 गांव में टी.वी. उपलब्ध है।

व्यक्तिगत उत्तरदाताओं द्वारा जिन समाचार पत्र पत्रिका का क्रय किया जाता है उनमें प्रमुख है–

समाचार पत्र– दैनिक नवभारत, दैनिक नवभास्कर, दैनिक देशबन्धु, हाईवे चैनल, आंचलिक, पांचजन्य, सुधानिधि रोजगार एवं निर्माण, रोजगार समाचार आदि। समाचार पत्रिका – प्रतियोगिता दर्पण इंडिया टुडे, क्रिकेट सम्राट, प्रतियोगिता निर्देशिका, कादम्बिनी, विज्ञान प्रगति, माया आदि।

यहां यह तथ्य देखने को मिलता है कि व्यक्तिगत प्रयास से जो पाठक अपनी अभिरूचि अनुसार पत्र/पत्रिका क्रय करते हैं उनकी संख्या अत्यंत कम (मात्र 38.6 प्रतिशत) है जबकि 60 प्रतिशत से अधिक पाठक अपनी रूचि रखते हुए भी व्यक्तिगत कारणों से पत्र/पत्रिका क्रय नहीं कर पा रहे हैं। ग्राम स्तर पर जो समाचार पत्र उपलब्ध हैं उनमें विविधता का पूर्णतः अभाव है। आज के युग में जहां नित नई पत्र/पत्रिकाएं भरपुर पाठ्य सामग्री के साथ उपलब्ध हैं वहां पर ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम स्तर पर मात्र दो प्रकार के पत्र (पंचायिका, रोजगार एवं निर्माण) ग्राम वासियों के लिए उपलब्ध है जो कि उनकी आवश्यकता व रूचि को संतुष्ट करने में पुरी तरह सक्षम नहीं हो सकते। आधुनिक संचारर माध्यमों में जिले के ग्रामीण क्षेत्र में यद्यपि टेलीविजन उपलब्ध कराए गए हैं जो कि सभी गांव में हैं सर्वेक्षित 12 गांवों में से यह सुविधा उपलब्ध है। सामान्य तौर पर ग्रामीणों की स्थिति विपत्र है सर्वेक्षित गांव में से लगभग 53 प्रतिशत गांव के संबंध में यह पाया गया

Scanned by CamScanner

कि वह गांव आर्थिक रूप से संपन्न नहीं है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में औसत रूप में ग्रामीणों की स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं कही जा सकती कि वह व्यक्तिगत रूप से अपनी रूचि की अध्ययन सामग्री का क्रय कर सके न ही अधिकांश (60प्रतिशत) के पास संचार के आधुनिक साधन उपलब्ध है ऐसी स्थिति में वे अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए पूरी तरह सहायता पर निर्भर है। मानव मस्तिष्क हमेशा क्रियाशील होता है चाहे वह ग्रामीण हो अथवा शहरी। अतः आवश्यक है कि ग्रामीणों को भी वही साधन व सुविधा उपलब्ध कराई जाए जो शहरी नागरिक को उपलब्ध है क्योंकि प्रगति का पूर्ण अधिकार उन्हें भी है। अतः इन अधिकारों की प्राप्ति हेतु ग्रामीणों के मध्य ऐसा वातावरण तैयार करना आवश्यक है जो कि उनके व्यक्तित्व को विकसित होने दे सके। अतः शिक्षित नागरिकों का निर्माण व बन्धुत्व तथा सह अस्तित्व के उच्च लक्ष्य तक इनको पहुंचाने हेतु इन क्षेत्रों में पुस्तकालय का होना अत्यंत आवश्यक है जो कि समाज में शिक्षित, चिंतनशील व विवेकशील नागरिक का निर्माण कर अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह अपने पाठ्य सामग्री के माध्यम से सुगमतापूर्वक कर सकता है।

4. बौद्धिक आवश्यकताः— पुस्तकालय ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहां विभिन्न पाठ्य सामग्री संग्रहित होती है। आज के युग में भी ग्रामीणों में अंधविश्वास, जादू टोना, भूप्रेत आदि बातों पर विश्वास कायम है वहीं अनेक सामाजिक कुरीतियां जैसे जातिप्रथा, छुआछुत, अंध विश्वास अभी भी ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त है। अंध विश्वास को मानने वाले लगभग 55 प्रतिशत हैं, वहीं जाति प्रथा को मानने वाले की भी कमी (लगभग 65 प्रतिशत) नहीं हैं। यद्यपि ग्रामीणों में लगभग 70 प्रतिशत से अधिक लोगों ने विधवा विाह के संबंध में सकारात्मक उत्तर दिया तथा छुआछुत को लगभग नकार दिया जो कि उनके बौद्धिक स्तर को बताता है तथापि अनेक रूढ़िवादी मान्यताओं व कुरीतियों से ग्रामीण बाहर नहीं निकल पाए हैं। ग्रामीणों के मानसिक व आर्थिक विकास के लिए उनके बौद्धिक स्तर को ऊंचा उठाना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक उनके मन मस्तिष्क में बसे रूढ़िवादी मान्यताओं व कुरीतियों को बाहरर निकालना है। पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य से वे अपना ज्ञान वृद्धि कर वैज्ञानिक पहलुओं को जानकर व समझकर अंधविश्वास, जादू टोना,

Scanned by CamScanner

भूत प्रेत आदि तर्कहीन बातों से स्वयं को अलग कर सकेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में यह अंधविश्वास कभी–कभी इतना गंभीर हो जाता है कि इस पर विश्वास कर दो व्यक्ति, दो परिवार या दो गुटों के मध्य झगड़े इस स्तर तक पहुंच जाते हैं कि लोगों की हत्याएं तक हो जाती है। अतः इन सामाजिक बुराईयों को उन क्षेत्रों से हटाना अत्यंत आवश्यक है। यह तभी संभव है जब इस संबंध में उन्हें तर्कसंगत ढंग से समझाया जाए जो कि विभिन्न पत्र/पत्रिकाएं/साहित्य में छपे होते हैं इन साहित्य व पाठ्य सामग्री को पढ़कर वे किसी भी घटना, दुर्घटना पर अंधविश्वास के आधार पर किसी दूसरे के साथ दुर्व्यवहार न कर सके। अतः साहित्य उन्हें वैज्ञानिक ज्ञान देकर उन्हें व्यवहारिक व विवेकशील बनाने में मदद कर आपस में भाई चारे के साथ रहना सिखाता है, और यह उनके सामाजिक स्तर पर बौद्धिक विकास का द्योतक होगा।

5. मनोरंजन के लिए आवश्यकता :– कोई भी व्यक्ति मानसिक एवं शारीरिक रूप से जितनी थकान महसूस करता है उतना ही मनोरंजन की आवश्यकता उस व्यक्ति को होती है ताकि वह तरोताजा होकर पुनः अपने कर्तव्य में जुट जाए। ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीण इतनी ज्यादा शरीरिक मेहनत करते हैं कि एक आम शहरी नागरिक उस स्तर तक कर ही नहीं सकता है इसके अलावा अपने व्यवसाय से संबंधित विभिन्न परेशानियां, समस्याएं आदि भी उन्हें लगातार घेरे रहती हैं इन सब से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय मनोरंजन है ताकि वह कुछ समय के लिए अपनी समस्याओं एवं थकान को भूलकर भरपूर आनंद ले सके। इसके अतिरिक्त अवकाश के क्षणों का सदुपयोग, महिलाओं व बच्चों के खाली वक्त का सदुपयोग होने के साथ–साथ उनके ज्ञान में भी वृद्धि होती रहे जिससे उनका मानसिक पिछड़ापन दूर हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि गांवों में मनोरंजन के साधन उपलब्ध हों। यह विडम्बना ही है कि शहरी व औद्योगिक क्षेत्रों में अनेक स्थानों पर मनोरंजन के पर्याप्त साधन उपलब्ध है। परंतु गांवों में जहां की अधिकांश जनसंख्या को देश की आर्थिक स्थिति को आधार देने का (कृषि व्यवसाय के कारण) श्रेय जाता है उसके लिए किसी प्रकार के मनोरंजन के साधनों को उपलब्ध कराने की कोई चेष्टा नहीं की जाती। सर्वेक्षण में मात्र 100 प्रतिशत गांवों में टी.वी. सेट्स पाया गया तथा पाठय सामग्री के नाम पर मात्र 100

Scanned by CamScanner

पत्र पत्रिकाएं ली जाती हैं। ग्राम स्तर पर किए गए सर्वे में देखा गया है कि 43.5 प्रतिशत ग्राम सरपंच ने यह कहा कि उनके गांव में मनोरंजन स्थल हैं उस स्थल के विवरण देने पर जो स्थान उन्होंने बताए हैं वे अत्यंत रोचक हैं जैसे गुड़ी (गांव में किसी भी स्थान को निर्धारित कर लिया जाता है जहां शेड या छावनी डालकर बैठने लायक स्थान बना लिया जाता है), चौपाल (सामान्यतः पेड़ के चारों ओर चबुतरे का निर्माण कर अथवा किसी स्थान पर शेड डाल कर बैठने योग्य स्थान बना लिया जाता है जहां पर ग्रामवासी पंचायत की विभिन्न समस्याओं को बैठकर सुलझाते हैं तथा फुर्सत के क्षणों में वहां ग्रामीण बैठे रहते हैं), स्कूल प्रांगण, ग्राम पंचायत भवन, सामुदायिक भवन, स्कूल भवन आदि। जबकि 53 प्रतिशत ग्राम पंचायत ने किसी भी प्रकार के मनोरंजन स्थल न होने की बात कही है। जिस प्रकार के मनोरंजन स्थल का विवरण दिया गया है उससे पता चलता है कि गांव में मनोरंजन हेतु कोई विशिष्ट स्थान नहीं है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इन स्थानों पर सामान्य तौर पर पुरूष वर्ग ही बैठते हैं तथा महिलाएं एवं बच्चे नहीं आते अर्थात् इन गांवों में ऐसा कोई स्थान नहीं हैं जहां व्यक्ति बैठकर थोड़ा समय व्यतीत करे और यदि छोटे मोटे स्थान को उस रूप में परिवर्तित कर भी लिया गया है तो वहां मनोरंजन के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं। यह सर्वविदित ही है कि पुस्तकालय ज्ञान वृद्धि के साथ–साथ मनोरंजन स्थल के रूप में भी कार्य करता है अतः उसकी आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्र से भी ज्यादा है ताकि ग्रामीण पुरूष, महिलाएं तथा बच्चे अपने फुर्सत के क्षणों का उपयोग कर सके व मनोरंजन की आड़ में अपना ज्ञान बढ़ा सके।

निष्कर्ष

सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मान, लक्ष्य या आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। ये मूल्य हमारे लिए कुछ अर्थ रखते हैं और उन्हें हम अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण समझते हैं। इन मूल्यों का एक सामाजिक सांस्कृतिक आधार या पृष्ठभूमि होती है इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए–भारतीय समाज के हिंदुओं में विवाह के प्रति एक विशिष्ट सामाजिक मूल्य यह है कि विवाह एक पवित्र व

Scanned by CamScanner

धार्मिक बंधन है इस कारण इसे अपनी इच्छानुसार तोड़ा नहीं जा सकता है। साथ ही इसकी पवित्रता तभी बनी रह सकती है जबकि पति–पत्नि एक दूसरे के प्रति वफादार बने रहें। इन मूल्यों का सामाजिक प्रभाव यह होता है कि हिंदुओं में विवाह विच्छेद की भावना नहीं पनप पाती है।

इस प्रकार सामाजिक मूल्य किसी एक व्यक्ति का मूल्य नहीं होता है, यह तो समूह का मूल्य होता है और इसीलिए यह व्यक्तियों के व्यवहार को प्रभावित करता है अर्थात् व्यक्ति को एक विशेष ढंग से व्यवहार करने को बाध्य करता है। सामाजिक मूल्य व्यक्तित्व को या सामाजिक अंतः क्रिया की व्यवस्था को संगठित करने में सहायक होता है, क्योंकि मूल्य कुछ सामान्य सामाजिक आदर्श, लक्ष्य या नीतियों को सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित करता है जिसके फलस्वरूप सामाजिक संघर्ष की संभावनाएं या सामाजिक जीवन की अनिश्चितताएं कम हो जाती है। मूल्यों को एक धारणा या मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिसके द्वारा चीजों की एक दूसरे के साथ तुलना की जाती है और वे एक दूसरे के संदर्भ में स्वीकार या अस्वीकार की जाती है, वांछित या अवांछित, अच्छी या बुरी, अधिक उचित या कम उचित मानी जाती हैं। सामाजिक मूल्यों के द्वारा सभी प्रकार की वस्तु विचार, भावना, क्रिया, गुण, पदार्थ, व्यक्ति, समूह लक्ष्य, साधन आदि का मूल्यांकन किया जाता है।

इस प्रकार सामाजिक मूल्य, संस्कृति तथा सभ्यता हमारे जीवन के बड़े ही महत्वपूर्ण आदर्श नियम या लक्ष्य है इसके बिना समाज में स्थिरता नहीं हो सकती है तथा जीवन के इन आदर्श नियम या लक्ष्यों की प्राप्ति व्यक्तित्व के विकास से ही संभव है। व्यक्तित्व के विकास में ही वास्तविक शिक्षा की पूर्ति देखी जा सकती है। व्यक्ति के व्यक्तित्व में सामाजिक मूल्यों का समावेश सामाजिक प्रक्रिया के अंतर्गत अर्थात जनम के साथ ही हो जाता है। परिवार, पड़ोस और समाज की विभिन्न संस्थाएं जैसे स्कूल, धर्म आदि अपने से संबंधित सामाजिक मूल्यों से परिचित कराते हैं और उन्हें ग्रहण करने की प्रेरणा देते हैं। जैसे परिवार से आरंभ कर जीवकोपार्जन के क्षेत्र तक बचपन से व्यक्ति यही सीखता आया है कि बेईमानी गलत बात है, सदा सत्य बोलना, सब पर दया करना, बड़ों का सम्मान

Scanned by CamScanner

करना, ईश्वर में विश्वास रखना आदि प्रमुख तथा महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य है। अतः सामाजिक मूल्य सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, एम.ए. एवं शर्मा, प्रमोदः सार्वजनिक पुस्तकालय संगठनः जयपुरः आर.बी. एस.ए. पब्लिशर्स, 1995
2. अग्रवाल, श्यामसुन्दरः ग्रंथालय एवं समाजः जयपुरः आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, 1994
3. कालाओर, गोपीनाथः ग्रंथालय विज्ञान विविध आयामः कानपुरः विकास प्रकाशन, 1994
4. कुलश्रेष्ठ, अजयः सार्वजनिक पुस्तकालय प्रशासनः जयपुरः शब्द महिमा प्रकाशन, 1995
5. कुलश्रेष्ठ, अजयः सार्वजनिक पुस्तकालय संगठनः जयपुरः रचना प्रकाशन, 1988
6. कौशिक, श्यामलालः शिक्षा क्रम विकासः जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
7. ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्लीः सुनिश्चित रोजगार योजना के अन्तर्गत ग्रामीण निर्धनों के लिए रोजगार, 1995
8. गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा, डी.डी.: भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्रः आगराः साहित्य भवन
9. चक्रवर्ती, रीताः एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम का आदिवासी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (शोध प्रबंध): गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर म.प्र., 1990
10. चांद, एस.एम. : भारतीय संस्कृति का विकासः जयपुर : प्रिन्टवेल, 1992
11. छत्तीसगढ़ लोकरंग स्मारिका : रायपुर (छत्तीसगढ़ लोकरंग)
12. जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, जिला– बिलासपुर ड्वाकरा योजनाः ग्रामीण महिलाओं एवं बच्चों की योजना, 1994–95
13. जैन, दशरथ : समाज एवं संस्कृति : भोपालः म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1985
14. जैन, शशी के. : ग्रामीण समाज शास्त्र : नई दिल्ली : रिसर्च पब्लिकेशन
15. जोशी, ओमप्रकाशः ग्रामीण नगरीय समाज शास्त्र : दिल्ली : रिसर्च पब्लिकेशन, 1984

View publication stats
Scanned by CamScanner